Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 45–46

फसल की रखवाली से लेकर मंडी तकः किसान की पूरी यात्रा

रविंद्र जलवानिया[1], डॉ. सुलोचना[2], डॉ श्रेया[3], डॉ. निमित कुमार[4] एवं पंकज कुमार यादव[5]

[1]स्नातकोत्तर, कृषि प्रसार, बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झाँसी
[2]सहायक प्रोफेसर–कम– जूनियर वैज्ञानिक, कृषि संकाय एग्रीकल्चर कॉलेज गढ़वा, बिशुनपुर, पिपराकला, गढ़वा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, झारखंड
[3]सहायक प्रोफेसर, बागवानी महाविद्यालय, सरदारकृषिनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, जगुदान, मेहसाणा, गुजरात,
[4]सहायक प्रोफेसर, कृषि विज्ञान महाविद्यालय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश,
[5]पीएचडी, कीट विज्ञान, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – ravindrajalwaniya786@gmail.com

परिचय

भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है क्योंकि यहाँ की अधिकांश आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। किसान को "अन्नदाता" इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसकी मेहनत से ही समाज का पेट भरता है। लेकिन खेत से अन्न हमारी थाली तक पहुँचने की यात्रा आसान नहीं होती। यह यात्रा कठिन परिश्रम, धैर्य और चुनौतियों से भरी होती है। किसान बीज बोने से लेकर फसल पकने, उसकी रखवाली करने और फिर मंडी तक पहुँचाने में दिन–रात मेहनत करता है। इस लेख में हम किसान की इस पूरी यात्रा का क्रमबद्ध वर्णन करेंगे।

फसल की शुरुआतः बीज से उम्मीद तक

हर किसान की यात्रा खेत की जुताई और बीज की बुआई से शुरू होती है। वह अपनी मिट्टी, मौसम और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार फसल का चुनाव करता है। सही बीज का चयन, उर्वरक और पानी की व्यवस्था, कीट–रोग प्रबंधन दृ यह सब उसकी तैयारी का हिस्सा है। बीज बोते समय किसान के मन में केवल एक ही आशा रहती है कि उसकी मेहनत रंग लाए और फसल अच्छी हो।

फसल की रखवाली का संघर्ष

जब पौधे अंकुरित होकर बढ़ने लगते हैं, तो किसान का असली संघर्ष शुरू होता है। फसल को समय–समय पर पानी देना, खाद डालना, कीट व रोग से बचाना और खरपतवार निकालना उसकी जिम्मेदारी होती है। जैसे–जैसे फसल पकने लगती है, पक्षियों, जंगली जानवरों और चोरी का खतरा बढ़ जाता है। गाँवों में आज भी किसान दिन–रात खेतों में चौकीदारी करता है। कहीं वह मचान बनाकर बैठता है तो कहीं अलाव जलाकर रात भर जागता है। यह समय उसके लिए बेहद नाजुक होता है क्योंकि थोड़ी–सी लापरवाही से उसकी महीनों की मेहनत बर्बाद हो सकती है।

कटाई का समय

फसल की कटाई किसान के लिए खुशी और तनाव दोनों लेकर आती है। खुशी इसलिए कि उसकी मेहनत अब सामने दिखाई देती है और तनाव इसलिए कि मौसम की मार से पूरी फसल कुछ ही दिनों में खराब हो सकती है। गेहूँ, धान या दाल जैसी फसलों की कटाई यदि समय पर न की जाए तो बारिश या तेज हवा से भारी नुकसान हो सकता है। बड़े किसानों के पास हार्वेस्टर जैसी आधुनिक मशीनें होती हैं, लेकिन छोटे किसान आज भी दरांती, हंसिया और बैलगाड़ी पर निर्भर रहते हैं।

कटाई के दौरान पूरा परिवार और कभी–कभी पूरा गाँव मिलकर काम करता है।

मड़ाई और दानों की सफाई

कटाई के बाद मड़ाई की प्रक्रिया आती है। पहले यह काम बैलों के पैरों से करवाया जाता था, लेकिन अब थ्रेशर और मशीनें इस काम को आसान बना देती हैं। मड़ाई के बाद दानों को भूसे से अलग किया जाता है। इसके बाद दानों की सफाई और सुखाई की जाती है ताकि उनमें नमी न रहे। यदि सही तरीके से सुखाया न जाए तो अनाज जल्दी खराब हो जाता है। यह प्रक्रिया किसान के धैर्य और मेहनत की दूसरी बड़ी परीक्षा होती है।

भंडारण की चुनौतियाँ

फसल तैयार होने के बाद सबसे बड़ी समस्या आती है भंडारण की। गाँवों में किसान अनाज को मिट्टी के कोठार, बांस की टोकरी, या बोरियों में रखता है। परंतु इनमें नमी, चूहे और कीट का खतरा हमेशा बना रहता है। सरकार द्वारा गोदाम और कोल्ड स्टोरेज की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं, लेकिन इन तक हर किसान की पहुँच नहीं होती। खराब भंडारण के कारण अक्सर किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

फसल का परिवहन

भंडारण के बाद अगला चरण है फसल को मंडी तक पहुँचाना। ग्रामीण क्षेत्रों में किसान आज भी बैलगाड़ी, ट्रैक्टर–ट्रॉली और छोटे ट्रकों का सहारा लेते हैं। लंबी दूरी और खराब सड़कों की वजह से परिवहन की लागत बढ़ जाती है। कभी–कभी रास्ते में बारिश या दुर्घटना भी नुकसान पहुँचा देती है। परिवहन केवल सामान ढोने का कार्य नहीं है, बल्कि यह किसान की उम्मीदों और मेहनत का सफर होता है।

मंडी का अनुभव

मंडी पहुँचने के बाद किसान की असली परीक्षा शुरू होती है। यहाँ उसे अपनी फसल को बेचने के लिए कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। सबसे पहले उसकी उपज की नीलामी होती है। यहाँ बिचौलियों और आढ़तियों का दबदबा होता है। कई बार किसान को अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करती है, लेकिन हर किसान को इसका लाभ नहीं मिल पाता क्योंकि सभी फसलों की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर नहीं होती। इसके अलावा मंडी में भुगतान में देरी और पारदर्शिता की कमी भी किसानों के लिए बड़ी समस्या है।

किसान की चुनौतियाँ

खेत से मंडी तक की यात्रा आसान नहीं होती। मौसम की अनिश्चितता, लागत में वृद्धि, कीट और रोग, उचित मूल्य न मिलना, भंडारण की कमी और बिचौलियों का दबाव दृ ये सभी किसान के सामने बड़ी चुनौतियाँ बनकर खड़ी होती हैं। यही कारण है कि कई बार किसान अपनी उपज लागत से भी कम दाम पर बेचने को मजबूर हो जाता है।

किसान की उम्मीदें

कठिनाइयों के बावजूद किसान अपने धैर्य और विश्वास के साथ हर साल फिर से बीज बोता है। उसके लिए खेती केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है। किसान यह जानता है कि उसकी मेहनत से ही समाज का पेट भरता है। यही कारण है कि वह बार–बार नई आशा के साथ अपने खेतों में लौटता है।

समाधान और सुधार की दिशा

यदि किसान की यात्रा को आसान बनाना है तो कई स्तरों पर सुधार आवश्यक है।

- आधुनिक तकनीक और मशीनों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराना।
- भंडारण और कोल्ड स्टोरेज की पर्याप्त सुविधाएँ विकसित करना।
- पारदर्शी और डिजिटल मंडी प्रणाली लागू करना।
- न्यूनतम समर्थन मूल्य का दायरा बढ़ाना और सभी किसानों तक इसकी पहुँच सुनिश्चित करना।
- परिवहन और सड़क ढांचे को बेहतर बनाना।
- इन सुधारों से किसान को न केवल उचित मूल्य मिलेगा बल्कि उसकी मेहनत का सम्मान भी बढ़ेगा।

निष्कर्ष

किसान की यात्रा खेत से मंडी तक केवल अनाज पहुँचाने की नहीं, बल्कि उसके संघर्ष, उम्मीद और जीवन दर्शन की भी कहानी है। वह दिन–रात मेहनत करता है ताकि समाज का पेट भर सके। हमें यह समझना होगा कि यदि किसान सुरक्षित और खुशहाल नहीं होगा, तो समाज का कोई भी वर्ग सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए आवश्यक है कि किसान की स्थिति सुधारने के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ। जब किसान की मेहनत का सही मूल्य उसे मिलेगा तभी "जय जवान, जय किसान" का नारा सार्थक होगा।